शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

उच्चतर प्राथमिक कक्षा के छात्रों में सामाजिक मूल्यः एक अभ्यास

प्राप्तिः 16.11.2021
स्वीकृतः 27.12.2021

डॉ० निर्मल कुमार के. पटेल
गृ०ह० संघवी शिक्षण महाविद्यालय
भावनगर
ईमेलः *nirmalpatel8228@gmail.com*

सारांश

प्रत्येक समाज में कुछ नियम, उपनियम होते है जो उसकी आधारशिला होती है। व्यक्ति उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है, इसलिए मानव को सामाजिक प्राणी माना गया है। आज 'नियम' और 'आदर्शो' मूल्य कहे जाते है जो दर्शाते है की क्या सही है? और क्या गलत? सामाजिक व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए सर्वश्रेष्ठ मानकों का निर्माण करना पड़ता है। एक तरह से मूल्य ही समाज के सुव्यवहार के मानक है।

प्रस्तावना

सभी समाज के मूल्य भिन्न–भिन्न होते हैं। वास्तविक रूप में यही समाज के व्यावहारिक मानक है, जिसके अनुसार व्यक्ति के जीवन को समाज में दिशा प्रदान करनी पड़ती है। जो समाज में योग्य–अयोग्य, कर्तव्य–अकर्तव्य दर्शाता है। जैसे किसी की निंदा नहीं करनी, प्राणीमात्र के प्रति प्रेमभाव रखना, सत्य बोलना आदि भारतीय संस्कृति के बुनियादी मूल्य हैं। मूल्य समाज में ही विकसित होते हैं। उसमे सामाजिकता का गुण विधमान होता है। प्रत्येक मानवी व्यक्तिगत रूप से उसका पालन करता है। उसमे संस्कृति का प्रतिबिंब दिखता है। संस्कृति का बदलाव एवं अन्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। मूल्य भी इन सभी परिव्रत्यो से अलिप्त नहीं है। जैसा व्यक्ति वैसा समाज, जैसा समाज वैसा व्यक्ति। मूल्य और व्यक्ति की आकांक्षाए साथ–साथ चलती है। वर्तमान समय में मूल्यों का पतन मूल्य शिक्षा की आवश्यकता की और इंगित करता है।

मूल्य शिक्षा कैसी? क्यों? और कौन प्रदान करेगा? यह प्रश्न के साथ सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, व्यावसायिक, शैक्षिक, धार्मिक आदि प्रकार के होते हैं।

अध्येता के सामने संशोधन करने का अवसर निर्माण हुई तो उन्होंने छात्रों में सामाजिक मूल्य के सन्दर्भ में कार्य करना तय किया। अध्येता का मानना है कि छोटे न्यादर्श पर भी इस तरह का संशोधन अपने आपमें महत्वपूर्ण है। जिस के निष्कर्ष उपयोगी रहेंगे।

समस्या कथन

" उच्चतर प्राथमिक कक्षा के छात्रों में सामाजिक मूल्य : एक अभ्यास "

अभ्यास के हेतु

प्रस्तुत अभ्यास निम्नलिखित हेतुओ को ध्यान में रखकर किया गया था।

१. उच्चतर प्राथमिक के छात्रों में सामाजिक मूल्य के सन्दर्भ में छात्रों के अभिप्रायो को जानना।

२. उच्चतर प्राथमिक के छात्रों में सहपाठियों के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के अभिप्रायो को जानना।

३. उच्चतर प्राथमिक के छात्रों में परिवार के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के अभिप्रायों को जानना।

४. उच्चतर प्राथमिक के छात्रों में नैतिकता के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के अभिप्रायो को जानना।

५. उच्चतर प्राथमिक के छात्रों में समाज के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के अभिप्रायो को जानना।

परिसीमन

प्रस्तुत अभ्यास को समय, आर्थिक तत्व और क्षमता को ध्यान में रखकर निम्नलिखित परिसीमन का स्वीकार किया था।

१. प्रस्तुत अभ्यास नवसरीजीला के उच्चतर प्राथमिक विभाग तक सीमित था।

२. अध्ययन में न्यादर्श के रूप में वर्ष :२०१७–'१८ के १०० छात्रों को सहेतु कन्यादर्श पसंदगीरीत में समाविष्ट किया गया था।

३. अध्ययन में सामाजिक मूल्य के संदर्भ में माहिती प्राप्त करके निष्कर्ष तक पहुचने के लिए केवल अभिप्रायो को ध्यान में लिया गया था।

४. अध्ययन के उदेश्यों को ध्यान में रखकर उपकरण के रुप मे स्वरचित अभिप्रायावलि का उपयोग किया गया था।

जन संख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अभ्यस में नवसारी जीले की जील पंचायत संचालित उच्चतर प्राथमिक विद्यालयो में अध्ययन करते सभी छात्र इस अभ्यास के जनसंख्या थे। हालाकि ज्यादा बड़े समुदाय पर अभ्यास करना आर्थिक, व्यक्तिगत शक्ति और समय के सन्दर्भ में समस्या रूप बन सकता है। इसलिए अभ्यास के उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श की पसंदगी आवश्यक है।

प्रस्तुत अभ्यास में छात्रों के सामाजिक मूल्य के बारे में सर्वेक्षण के माध्यम से अभिप्राय प्राप्त करना था इसलिए अध्येता ने नवसारी जीले स्थित १० विद्यालय के उच्चतर प्राथमिक कक्षा १०० छात्रों को सहेतु कन्यादर्श पसंद गीरी तसेपसंदगी की थी।

अभ्यास में प्रस्तुत उपकरण

प्रस्तुत अभ्यास में छात्रों के सामाजिक मूल्यों की जानकारी प्राप्त करनी थी इसलिए छात्रों की आयुको ध्यान में रखकर त्रि–बिंदु अभिप्रायावली बनाई थी।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत संशोधन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित है।

सहपाठियों के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के निष्कर्ष

- छात्र अपने मित्रो को शिक्षा के विषय में मदद करते है।
- छात्र अपनेमित्रो के साथ चर्चा करके कार्य करते है।
- ज्यादातर छात्र अपने सहपाठियों को अपशब्द नहीं बोलते है।
- छात्र अपने मित्रो से झूठ नही बोलते।
- छात्र अपने मित्रो की खुशी से खुश नही होते है।

परिवार के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के निष्कर्ष

- छात्र अपने माता–पिता और बड़ो का आदर करते है।
- छात्र परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे।
- छात्र स्वीकार करते है कि वह अपने परिवार की सभी आशाए पूर्ण करेगें।
- छात्र अपने परिवार की हर जरूरत पूर्ण करने का प्रयास करेगा।
- छात्र अपने परिवार को समाज में ऊँचा मान–सम्मान दिलाएंगे।

नैतिकता के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के निष्कर्ष

- छात्र हमेशा सही–गलत का विचार करके निर्णय करेंगे।
- छात्र धीरज और सरलता जैसे गुण को अपनाऊंगा।
- छात्र प्रमाणिकता, भागीदारी जैसी बातो का अनुसरण करेंगे।
- छात्र स्वतंत्रता, भागीदारी जैसी बातो का अनुसरण करेंगे।
- छात्र परिवार और माता–पिता का ध्यान रखेंगे।

समाज के सन्दर्भ में सामाजिक मूल्य के निष्कर्ष

- छात्र शाला में समाज के सामाजिक कार्य में भागलेंगे।
- छात्र शाला में समाज के विकास के कार्य करेंगे।
- छात्र शाला में समाज के विभिन्न क्षेत्र के विकास में अपना सहकार करेंगे।
- छात्र शाला में शाला के नियमों का पालन करेंगे।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

शोध के निष्कर्ष शैक्षिक निहितार्थ की और इंगित करते है, जो निम्नलिखित है।

1. छात्रों को अपने मित्रों को शिक्षा के विषय में मदद करनी चाहिए।
2. छात्रों को अपने सहपाठियों को अपशब्द नहीं बोलना चाहिए।
3. छात्रों को अपने मित्रो से झूठ नहीं बोलना चाहिए।
4. छात्रों को अपने मित्रो की खुशी से खुश होना चाहिए।
5. छात्रों को अपने माता–पिता और बड़ो का आदर करना चाहिए।
6. छात्रों को परिवार के प्रति अपनी जिम्मेवारी निभानी चाहिए।
7. छात्रों को अपने परिवार की सभी आशाए पूर्ण करनी चाहिए।
8. छात्रों को अपने परिवार की हर जरूरत पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए।
9. छात्रों को अपने परिवार को समाज में ऊँचा मान–सम्मान दिलाने का प्रयास करना चाहिए।
10. छात्रों को शाला के नियमों का पालन करना चाहिए।
11. छात्रों को प्रामाणिकता और निष्ठा जैसे आदर्शो पर चलना चाहिए।
12. छात्र को परिवार और माता–पिता का ध्यान रखना चाहिए।
13. प्रत्येक छात्र को स्वार्थ, लालच और भ्रष्टाचार जैसे भौतिक नकारात्मकताओं से दूर रहना चाहिए।

14. प्रत्येक छात्र नैतिकता पर आघात, हिंसा, बदले की भावना पर्यावरण को क्षति जैसी प्रवृति नहीं करनी चाहिए।

15. छात्रों को शाला में हमेशा मानव मूल्यों का जतन करना चाहिए।

16. छात्रों को शाला में प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए।

17. छात्रों को शाला में समाज के सामाजिक कार्य में भाग लेकर प्रदान करना चाहिए।

18. छात्रों शाला में समाज के विकास के लिए कार्यकरेंगे।

सन्दर्भ

1. Agarwal, J.C. Education for Values, *Environment and Human Rights*, Shipro Publication, Delhi.
2. Bhagwati, Binita. Comparative **Analysis of Value Orientation of to School systems,**Gauhati University Assam.
3. Bhandari. M.S. Value **Education, Secularism and Religion, Value Education in India,** Selection from University News-7. Association of India University, New Delhi.
4. Best J.W. & Kahn J.V. **Research in Education,**Printice Hall of India Private Limited, New Delhi.
5. Deshpande P.G. **University English – Gujarati Dictionary (6th Ed.),** Oxford University Press. Mumbai.
6. Modi. I. Human values and Social change, Rawat Publication, Jaipur.
7. Terry Page.G. Thomas J.B. & Marshal A.R. **International Dictionary of Education.** Nicolas Publishing Company, New York.
8. अस्थाना, बिपिन.: **शैक्षणिक अनुसंधान एवं सांख्यकी,** अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
9. सिंह, आनंद प्रकाश.: **सामाजिक संरचना,** नई दिल्ली।
10. कृष्णमूर्ति, जे.: **शिक्षा क्या है?** राजपाल एंडसन्स, दिल्ली.
11. देसाई, एच. जी.: **संशोधन प्रविधि और प्रविधियो.** यूनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य अमदावाद।
12. पाठक, आर. पी.: **डेवलोपमेंट एंड प्रोब्लेम्स ऑफ इंडियन एज्युकेशन,** डोर लिंग किंडर स्लेप्रा. लि. नयी दिल्ली.
13. अग्निहोत्री, रविन्द्र.: **आधुनिक भारतीय शिक्षा–समस्याए और समाधान,** राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
14. रूहेला, एस. पी.: **विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षण और शिक्षा,** अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा.
15. शर्मा, आर. ए.: **शिक्षा अनुसंधान** मेरठ, आटलाल बुक डिपो.
16. शर्मा, सरोज.: विकास मान भारतीय समाज में शिक्षण, श्याम प्रकाशन, जयपुर.
17. सिंह, कृष्णबीर.: **शैक्षिक अनुसंधान की प्रविधियाँ एवं संखिकीय अनुसंधान** यूनिवर्सिटी बुक हॉ उस प्रा. लि. जयपुर.